National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 195-196

कथानक की दृष्टि से राघवोल्लास महाकाव्य का वैशिष्ट्य

मनीष कुमार त्रिपाठी

शोध छात्र, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, गङ्गानाथ झा परिसर, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

अद्वैतयति प्रणीत राघवोल्लास महाकाव्य का सम्पादन वर्ष 2011 में डॉ0 रामकिशोर झा जी द्वारा राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान के गङ्गानाथ झा परिसर से हुआ है। कथानक की दृष्टि से बाल्मीकीय रामायण की रामकथा पर आधारित यह महाकाव्य बारह सर्गों में विभाजित है जिसमें रामजन्म से लेकर राम–सीता विवाह के पश्चात् अयोध्या प्रत्यागमन की कथा वर्णित है। इस प्रकार रामचरित के उल्लास पक्ष को उद्घाटित करने वाले राघवोल्लास महाकाव्य का यह नाम सार्थक ही है। अद्वैतयति ने प्रचलित रामकथा को कतिपय परिवर्तनों के साथ स्वीकार किया है तथा अपनी काव्यप्रतिभा के सामर्थ्य से एक रोचक रामकथा सुधीजनों के सम्मुख समुपस्थित की है, जो निःसन्देह प्रशंसनीय है।

सम्पूर्ण रामकथा को माता कौशल्या के मुख से सुनाये जाने के रूप में कहना इस महाकाव्य की अपनी विशेषता है। यह महाकाव्य मुख्यतया इन्द्रवज्रा छन्द में रचित तथा शब्दालङ्कारों से अलङ्कृत है। भक्तिरस राघवोल्लास महाकाव्य का अङ्गीरस है तथा श्रृंगार–वीर–शान्तादि भक्तिरस के अंग हैं। ओज–माधुर्य–प्रसादादि गुणों से समन्वित तथा वैदर्भी रीति से गुम्भित राघवोल्लास महाकाव्य कवि प्रतिभा का सर्वोत्तम निदर्शन है।

द्वादश सर्गों में उपनिबद्ध राघवोल्लास महाकाव्य में अद्वैतयति ने यद्यपि रामजन्म से लेकर विवाहोपरान्त अयोध्या प्रत्यागमन तक की कथा उपनिबद्ध की है तथापि पूर्वदृश्य के रूप में प्रथम सर्ग से तृतीय सर्ग पर्यन्त राम के वनगमन का कारुणिक दृश्य उपस्थित किया है जहाँ प्रथम सर्ग में पौरजनों के कारुणिक कथनों को देखकर सहृदय सुधीजन द्रवित हुए बिना नहीं रह सकता। यही कारण है कि अद्वैतयति ने इस सर्ग को 'पौरजनरामविरहोक्तिकथनम्' नाम दिया है। जनपदवासियों के कारुणिक निवेदनों का उदाहरण देखिए–

> आज्ञां पितुः प्राप्य शनैः प्रयातः पथा धराधीशगतोचितेन।
> तं वीक्ष्य पौरैः स्रवदस्रपूरैः हा! हा! रवो दुःखभरादकारि।।
> त्यक्तः सुभूषानिचयः कुतः स श्रीरामवस्त्राण्यपि होचितानि।
> क्व यासि सीतासहितोऽभिषेके मुहूर्त्त एष प्रहितोऽन्यवेशः।।
> माताजनानामियमद्य सीता पिताश्रिताशेषगुणस्त्वमेव।
> बिनापराधं चरणे रतानां त्यागं कथं हा! कुरुतः शिषूनाम?।।
> हा! कोमलं पद्मदलादलं यत्तलं यदस्याम्बुजलोचनायाः।
> क्वायं प्रचारः पुरतोऽप्यपारो स्पृशन्पुरौको हृदयं विचारः।।[1]

तत्पश्चात् द्वितीय तथा तृतीय सर्ग में राम–सीता–लक्ष्मण के वन्यजीवन की जो घटनायें वर्णित हैं उनमें बाल्मीकीय रामायण की मूलकथा से भिन्नता नहीं दिखाई पड़ती है। कतिपय दृश्य जैसे श्रीराम के चित्रकूट प्रवास के समय हिंसक पशुओं का अन्य पशुपक्षियों के साथ वैरभाव को त्यागकर आनन्द के साथ क्रीडा करना तथा तृतीय सर्ग में ही एक वृद्ध ब्राह्मण द्वारा रामभक्तिपरक, वैराग्यजनक दीर्घस्तुति करना आदि मूलकथा से भिन्न घटनायें हैं। तथापि इन घटनाओं से कथानक बोझिल नहीं होता अपितु रोचक बन पड़ा है।

चतुर्थ सर्ग से मूल रामकथा क्रमशः प्रारम्भ होती है। किन्तु कवि प्रतिभाजन्य नवीनता यह है कि यहाँ पुत्र वियोग से सन्तप्त रुदन करती हुई माता कौशल्या सुमित्रा को राम के जन्म से आरम्भ करके कथा सुनाना प्रारम्भ करती हैं–

> याते द्विजाते कौशल्या रामबाल्यादिसत्क्रियाः।
> दुःखभारस्रवन्नेत्रा सुमित्रामाह तत्परा।।[2]

पुत्रजन्म से पूर्व माता कौशल्या को चतुर्भुज के दर्शन तथा जन्म के पश्चात् माता द्वारा बालक्रीडा के लिए कहना, प्रातः काल माता द्वारा श्रीराम को दयानिधि, रघुनाथ, विश्वम्भर आदि कहकर जगाना। साथ यह कहना कि ''तुम्हारा सोना अब उचित नहीं, देखते नहीं प्रसिद्ध खल लङ्केश लोक कोश्षोकयुक्त कर रहा है''। निःसन्देह कवि की स्वकीय उद्भावना का उत्कृष्ट प्रदर्शन है–

> स्त्रोत्रं गोत्रमुदीर्य राम! भवतः कुर्वन्त्यपि प्रार्थनां
> नानासत्यवचश्चयाष्च विनयानम्रोत्तमाङ्गा पुरः।
> लङ्कायाः पुरः ईश्वरो विधिवरो नद्धः प्रसिद्धः खलो
> लोकान् शोकयुतान् करोति करुणासिन्धोस्तु बोधोऽधुना।।[3]

यही नहीं पिता दशरथ तथा माता कौशल्या दोनों ही यहाँ राम की स्तुति करते दिखलाई पड़ते हैं। अद्वैतयति ने बालक राम की सहजप्रवृत्तियों का वर्णन नहीं किया है। भगवान् विश्णु बालक राम का रूप तो धारण कर लेते हैं किन्तु माँ उनके ईश्वरत्व को नहीं भूल पाती। यह अवश्य ही कवि की नवीन दृष्टि है।

पंचम सर्ग के एक स्थल पर दशरथ के अगाध पुत्रप्रेम का दृश्य समुपस्थित होता है जहाँ वे अनेक युक्तियों से अपने पुत्र राम तथा लक्ष्मण को महर्षि विश्वामित्र के साथ भेजे जाने के आग्रह को स्वीकार नहीं करना चाहते। यह प्रसंग भी रामायण की मूल कथा से भिन्न ही है क्योंकि बाल्मीकीयरामायण में अयोध्याधिपति महर्षि के आग्रह को रघुकुल की मर्यादानुसार सहर्ष स्वीकारते हुए दिखलाई पड़ते हैं। प्रायः यही दृश्य रामायण को उपजीव्य मानकर लिखे गये परवर्ती महाकाव्यों में भी दृष्टिगत होता है। किन्तु अद्वैतयति ने पुत्र–प्रेम के इस प्रसंग को अत्यन्त मार्मिक रूप से उपस्थित कर विशिष्टता प्रदान की है। पिता दशरथ द्वारा महर्षि विश्वामित्र के प्रति किये गये कारुणिक निवेदनों के कतिपय उदाहरण देखिए–

> प्राणाः मदीया वपुशः प्रयान्तु सुखेन काचिन्न ततोऽस्ति हानिः।
> परन्तु रामः क्षणमात्रमत्र गात्रप्रसङ्गाद् विमुखो न मेऽस्तु।।
> बिना दृशं नाथ! भृशं मदीया तनुर्भवेत्संचलनेषु शक्ता।
> वियोगतो नास्य पदप्रमाणमस्या मुने! संचलनप्रसङ्गः।।
> मीना विनाम्भोनिचयं कदाचित् संजीवनं यान्तु निमेशमात्रम्।
> परन्तु नाहं रघुनायकेन जीवामि किंचिज्जनजीवनेन।।

मीना बिना वारि मनाक् क्षणार्द्धं संजीवनं यान्तु मुनेऽप्यनेके।
नाहं बिना हंसकुलध्वजेन जीवामि रामेण मनोरमेण।।[4]

इसी स्थल पर बालक राम पिता को उपदेश देते हैं और संसार की क्षणिकता तथा क्षणभङ्गुरता का विवेचन करते हैं जो, सर्वथा नवीन है। जिसे सुनकर वशिष्ठ आदि मुनियों का चकित हो जाना रोचक है–

श्रुत्वाभवन् विस्मितमानसास्ते
वशिष्ठमुख्या मुनयो नयज्ञाः।।[5]

राघवोल्लास महाकाव्य का अहल्या आख्यान भी रामायण की मूल कथा से भिन्न है। अहल्या पाषाणभूता है तथा रामचरणों की धूलि से उसका उद्धार होता है। तत्पश्चात् अहल्या द्वारा 'स एव रामो भगवानसि त्वम्' इस उक्ति को बार–बार दुहराते हुए भगवान् श्रीराम के विभिन्न रूपों को स्मरण करते हुए विस्तृत स्तुति की जाती है–

क्लेशान्निहन्तुं निजसेवकस्य कामांश्च दातुं सकलान्नृसिंहः।
स्तम्भादहो! यो जननं प्रपेदे स एव रामो भगवानसि त्वम्।
कालेम्बुराशेर्मथनस्य नाथ! कूर्मोऽपि शर्मप्रतिपादनाय।
पृष्ठेऽदरं मन्दरमुद्ददधार स एव रामो भगवानसि त्वम्।।
पादत्रयं यस्य जगत्त्रयंच जातं समस्तं बलियागकाले।
सतां मनो यत्र च वामनोऽसौ स एव रामो भगवानसि त्वम्।।[6]

अष्टम सर्ग में सीता द्वारा स्वयंवर से पूर्व स्वप्न में राम को देखकर उनके प्रति अनुरागयुक्त हो जाने के दृश्य का बड़ा ही स्वाभाविक तथा हृदयाहलादक वर्णन अद्वैतयति द्वारा किया गया है। यहाँ सीता की व्यग्रता इतनी अधिक बढ़ जाती है कि वे स्वप्न में देखे गये राम के बिना जीवित भी नहीं रहना चाहती है तथा यह कहने में भी संकोच नहीं करती है कि यदि मेरे द्वारा स्वयंवर में राम को नहीं प्राप्त किया जा सका तो मैं अपना प्राण त्याग दूँगी अन्यथा स्वयं ही श्रीराम के पास जाकर उनके चरणों की सेवा करुँगी–

किंच प्रिये! त्वं वद तं हि सत्यं नैवास्ति कृत्यं त्रपयाऽधुना मे।
लभ्यो मया स्याद् यदि नैष रामो भावी विरामो मम जीवितस्य।।
पिता कृतागाः सखि! दूरतोऽस्तु प्रयोजनं नैव ममाद्य तेन।
अहं करिष्ये स्वयमेव गत्वा नत्वा च रामाघ्रिसरोजसेवाम।।[7]

महाकाव्य के अन्तिम सर्ग में परशुराम का आगमन भी मार्ग में होता है न कि जनकपुर में। यहाँ परशुराम–लक्ष्मणसंवाद की योजना नहीं हुई है। परशुराम के पराक्रम का विस्तृत वर्णन तो है किन्तु श्री राम की प्रभावपूर्ण बातों से ही इनके क्रोध का अन्त दिखलाया गया है। महाकाव्य के अन्त में अपना विस्तृत परिचय देते हुए अद्वैतयति ने रामकथा समाप्त की है।

राघवोल्लास महाकाव्य में अद्वैतयति की रामभक्ति सर्वत्र मुखर हुई है। रामस्तुति के किसी भी प्रसंग को कवि ने ऐसे ही नहीं जाने दिया है। इस महाकाव्य में प्रत्येक प्रात्र रामस्तुति करता दिखाई देता है। भले ही वह पिता दशरथ हों या माता कौशल्या,गुरु विश्वामित्र तथा गुरु वशिष्ठ हों या राजा जनक। चतुर्थ सर्ग में राजा दशरथ और माता कौशल्या राम की स्तुति करते हैं। पंचम सर्ग में राम के महत्व के प्रतिपादन के प्रसङ्ग में गुरु विश्वामित्र राम की ही स्तुति करते हैं। षष्ठ सर्ग में जहाँ सुबाहु बध का प्रसङ्ग प्राप्त होता है वहाँ राम के दिव्य गुणों की चर्चा के नाम पर राम की ही स्तुति होती है। सप्तम सर्ग में ' स एव रामो भगवानसित्वम्' का बार–बार उच्चारण कर अहल्या द्वारा राम की विस्तृत स्तुति की जाती है। अष्टम सर्ग में सखियों द्वारा राम के अलौकिक सौन्दर्य का वर्णन होता है, सीता भी स्वप्नदृष्ट पुरुष की प्रशंसा करती हैं–फिर राम दर्शन के बाद, राम के ईश्वर रूप को ध्यान में रखकर उनकी स्तुति करती हैं। नवम सर्ग में विश्वामित्र राजा दशरथ को, राम ईश्वर हैं यह समझाते हुए प्रकारान्तर से राम की ही स्तुति करते हैं। दशम सर्ग में राम के सौन्दर्यवर्णन में उनके दिव्य रूप की ओर ही संकेत है। एकादश सर्ग में हाथी राम को ईश्वर समझकर, अपनी पीठ से नीचे उतरते समय अश्रुधारा प्रवाहित करता है। कवि ने वहाँ स्तुति सूचक वाक्य ही कहे हैं। द्वादश सर्ग में परशुराम द्वारा राम की स्तुति तो है ही, कवि ने अन्त में आत्मपरिचय के साथ राम की स्तुति द्वारा ही अपनी भक्ति निवेदित की है। इस प्रकार प्रत्येक सर्ग में राम की स्तुति का समावेश है। फलतः यह काव्य रामकथा के रूप में भक्तिकाव्य बन गया है।

उपर्युक्त संक्षिप्त पर्यालोचन से यह स्पष्ट है कि रामकथाश्रित महाकाव्य परम्परा में राघवोल्लास महाकाव्य कथानक की दृष्टि से निःसंदेह अद्वितीय है। भले ही रघुवंशमहाकाव्य रामचरितमहाकाव्य, जानकीहरण, भट्टिकाव्य, रामायणमंजरी, दशावतारचरित आदि की श्रेणी में सम्प्रति स्थापित नहीं है किन्तु इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि अपने वाले समय में अपनी इन्हीं विशिष्टताओं को समेटे यह महाकाव्य अवश्य ही प्रतिष्ठित होगा।

संदर्भ सूची

1. राघवोल्लासमहाकाव्यम्– 1/63–66 गङ्गानाथ झा परिसर, 2011
2. वही– 4/2
3. वही– 4/60
4. वही– 5/49–52
5. वही– 5/83
6. वही– 7/21–23
7. वही– 8/138–139